ओमप्रकाश वाल्मीकि

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» ओमप्रकाश वाल्मीकि: परिचय और प्रारंभिक जीवन

प्रश्न 1 (आसान). ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म किस राज्य में हुआ था?
उत्तर – उत्तर प्रदेश

प्रश्न 2 (आसान). उनके बचपन की दो मुख्य चुनौतियाँ क्या थीं?
उत्तर – सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयाँ

प्रश्न 3 (मध्यम). वाल्मीकि जी को पढ़ाई के दौरान किन-किन प्रकार के कष्ट झेलने पड़े?
उत्तर – उन्हें पढ़ाई के दौरान आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्ट झेलने पड़े।

प्रश्न 4 (कठिन). आपको क्या लगता है, 'मानसिक कष्ट' का उनके बचपन पर क्या प्रभाव पड़ा होगा?
उत्तर – मानसिक कष्ट से उन्हें हीन भावना, अकेलापन और पढ़ाई से मन हटने जैसी समस्याएँ हुई होंगी, जिससे उनके आत्म-विश्वास पर भी नकारात्मक असर पड़ा होगा।

» डॉ. भीमराव अंबेडकर का प्रभाव और लेखन दृष्टि में परिवर्तन

प्रश्न 5 (आसान). वाल्मीकि जी की 'रचना-दृष्टि' में किसका प्रभाव पड़ा?
उत्तर – डॉ. भीमराव अंबेडकर का।

प्रश्न 6 (आसान). वाल्मीकि जी ने अंबेडकर जी की क्या चीज़ों का 'अध्ययन' किया?
उत्तर – उनकी 'रचनाओं' का।

प्रश्न 7 (मध्यम). अंबेडकर जी के 'अध्ययन' से वाल्मीकि जी के लेखन में क्या 'बुनियादी परिवर्तन' आया?
उत्तर – उन्होंने दलितों की 'पीड़ा' और 'अनुभव' को 'प्रामाणिक अभिव्यक्ति' देने पर ज़ोर देना शुरू किया।

प्रश्न 8 (कठिन). वाल्मीकि जी के अनुसार, 'दलित की पीड़ा' को कौन बेहतर ढंग से समझ और व्यक्त कर सकता है? इस विचार ने उनके 'लेखन' को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – वाल्मीकि जी के अनुसार, 'दलित ही दलित की पीड़ा को बेहतर ढंग से समझ सकता है' और वही उसकी 'प्रामाणिक अभिव्यक्ति' कर सकता है। इस विचार ने उन्हें अपने 'जातीय अपमान और उत्पीड़न' को अपने लेखन में 'जीवंत वर्णन' करने की शक्ति दी, जिससे उनका लेखन यथार्थवादी और प्रभावशाली बना।

» ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्यिक योगदान और पहचान

प्रश्न 9 (आसान). ओमप्रकाश वाल्मीकि की सबसे प्रसिद्ध आत्मकथा का नाम क्या है?
उत्तर – जूठन

प्रश्न 10 (आसान). ओमप्रकाश वाल्मीकि को 1993 में कौन-सा पुरस्कार मिला था?
उत्तर – डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार

प्रश्न 11 (मध्यम). ओमप्रकाश वाल्मीकि के लेखन की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
उत्तर – उनके लेखन में जातीय अपमान और उत्पीड़न का जीवंत वर्णन मिलता है, और उनकी भाषा सहज, तथ्यपरक और आवेगमयी होती थी, जिसमें व्यंग्य का पुट भी होता था।

प्रश्न 12 (कठिन). ओमप्रकाश वाल्मीकि ने हिंदी में दलित साहित्य के विकास में क्या भूमिका निभाई? संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – उन्होंने दलितों की पीड़ा को 'प्रामाणिक अभिव्यक्ति' देकर हिंदी दलित साहित्य को एक नई दिशा दी। उनका मानना था कि 'दलित ही दलित की पीड़ा को बेहतर समझ सकता है', और उन्होंने अपने अनुभवों को 'जीवंत वर्णन' के साथ प्रस्तुत कर इस धारा को मजबूत किया।

» कहानी 'खानाबदोश' का परिचय और मुख्य विषय

प्रश्न 13 (आसान). 'खानाबदोश' कहानी के लेखक कौन हैं?
उत्तर – ओमप्रकाश वाल्मीकि

प्रश्न 14 (आसान). कहानी में किस वर्ग के शोषण को दिखाया गया है?
उत्तर – मजदूर वर्ग के शोषण को

प्रश्न 15 (मध्यम). 'खानाबदोश' कहानी का एक मुख्य विषय क्या है?
उत्तर – जातिवादी मानसिकता से उबरने की चुनौती

प्रश्न 16 (कठिन). 'खानाबदोश' कहानी में 'स्थानीय संवाद' क्यों महत्वपूर्ण हैं?
उत्तर – स्थानीय संवाद कहानी में 'वास्तविकता उत्पन्न' करने में सहायक हैं और पात्रों को अधिक जीवंत बनाते हैं।

» ईंट भट्ठे पर काम करने की परिस्थितियाँ

प्रश्न 17 (आसान). सुकिया और मानो भट्ठे पर कैसे काम करने आए थे?
उत्तर – वे 'दिहाड़ी मजदूर बनकर' भट्ठे पर काम करने आए थे।

प्रश्न 18 (आसान). भट्ठे पर सबसे खतरनाक काम क्या था?
उत्तर – भट्ठे का सबसे खतरनाक काम 'मोरी पर काम करना' था।

प्रश्न 19 (मध्यम). ईंट भट्ठे पर मजदूरों की आवासीय स्थिति कैसी थी?
उत्तर – मजदूर 'दड़बेनुमा छोटी-छोटी झोपड़ियों में' रहते थे, जिनमें 'झुककर घुसना पड़ता था' और रात में साँप-बिच्छुओं का डर लगा रहता था। रोशनी के लिए 'टिमटिमाती ढिबरियाँ' ही होती थीं।

प्रश्न 20 (कठिन). मानो को भट्ठे की ज़िंदगी कैसी लगती थी और क्यों?
उत्तर – मानो को भट्ठे की ज़िंदगी बहुत कठिन लगती थी। उसे 'अपने देस की सूखी रोटी भी परदेस के पकवानों से अच्छी होती है' ऐसा लगता था क्योंकि वह भट्ठे के खतरनाक काम, छोटी दड़बेनुमा झोपड़ियों और जंगली जानवरों के डर वाले माहौल से तालमेल नहीं बैठा पाई थी।

» मजदूरों का जीवन और उनकी आकांक्षाएँ

प्रश्न 21 (आसान). मानो को ईंट भट्ठे पर क्या मुश्किल लगती थी?
उत्तर – उसे 'दड़बेनुमा झोंपड़ियों' में 'साँप-बिच्छू का डर' और 'भट्ठे की जिंदगी से तालमेल' बिठाने में दिक्कत होती थी।

प्रश्न 22 (आसान). सुकिया ने मानो को क्या समझाकर ईंट भट्ठे पर काम करने के लिए राजी किया?
उत्तर – सुकिया ने कहा कि 'नरक की जिंदगी से निकलना है तो कुछ छोड़ना भी पड़ेगा' और 'आदमी की औकात घर से बाहर कदम रखने पे ही पता चले है'।

प्रश्न 23 (मध्यम). सुकिया और मानो के 'बेहतर जीवन' के सपने को आप अपने शब्दों में कैसे समझाएंगे?
उत्तर – उनके 'बेहतर जीवन' का सपना था कि वे असुरक्षित भट्ठे की जिंदगी से निकलकर एक सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जिएँ, अपना घर बना सकें और गाँव में मिली गरीबी भरी सादगी से भी बेहतर जिंदगी पाएं।

प्रश्न 24 (कठिन). आपको क्या लगता है, सुकिया और मानो की आकांक्षाएँ पूरी हो पाएंगी या नहीं, और क्यों?
उत्तर – शुरुआत में तो उनकी आकांक्षाएँ पूरी होती दिख रही हैं क्योंकि वे ज़्यादा काम करके 'दिहाड़ी बढ़ा' रहे हैं। पर मजदूरों के जीवन में अनिश्चितताएँ और शोषण भी बहुत होता है, जैसा कि कहानी में 'सूबेसिंह' के आने से पता चलता है। तो यह कहना मुश्किल है कि उनकी आकांक्षाएँ पूरी होंगी या नहीं, क्योंकि उनकी मेहनत के साथ-साथ बाहरी हालात भी बहुत मायने रखते हैं।

» शोषण और भेदभाव: सूबेसिंह का किरदार

प्रश्न 25 (आसान). सूबेसिंह कौन था?
उत्तर – सूबेसिंह भट्ठे के मालिक का बेटा था।

प्रश्न 26 (आसान). किसनी को कौन सा काम दिया गया था?
उत्तर – किसनी को दफ्तर की सेवा-टहल का काम दिया गया था।

प्रश्न 27 (मध्यम). महेश पर सूबेसिंह के शोषण का क्या असर हुआ?
उत्तर – सूबेसिंह ने महेश को नशे की लत लगवा दी थी, जिससे महेश गुमसुम रहने लगा और झोंपड़ी में पड़ा रहता था।

प्रश्न 28 (कठिन). पाठ में शोषण और भेदभाव को दर्शाने वाले सूबेसिंह के व्यवहार के दो उदाहरण विस्तार से समझाओ।
उत्तर – पहला उदाहरण: सूबेसिंह ने किसनी को दफ्तर की सेवा-टहल में लगाकर उसका फायदा उठाया, जो उसकी मज़दूरी के असल काम से अलग था। इससे किसनी का सामाजिक और नैतिक शोषण हुआ, जिसकी वजह से मजदूर वर्ग में फुसफुसाहटें शुरू हो गईं और महेश भी दुखी रहने लगा। दूसरा उदाहरण: सूबेसिंह ने महेश को जानबूझकर नशे की लत में डाल दिया। यह एक सोची-समझी चाल थी ताकि महेश कमज़ोर पड़ जाए और किसनी पर उसका नियंत्रण न रह पाए, जिससे सूबेसिंह अपना गलत काम बिना किसी रुकावट के जारी रख सके। यह मानसिक और शारीरिक शोषण का स्पष्ट उदाहरण है।

» सम्मान और अस्मिता का संघर्ष: जसदेव की पिटाई

प्रश्न 29 (आसान). सूबेसिंह ने जसदेव को क्यों पीटा था?
उत्तर – सूबेसिंह ने जसदेव को इसलिए पीटा क्योंकि मानो ने उसकी बात नहीं मानी थी और वह मजदूरों को डराना चाहता था।

प्रश्न 30 (आसान). जसदेव की पिटाई के बाद मानो ने क्या किया?
उत्तर – मानो ने जसदेव की चोटों पर हल्दी लगाई और उसके मन में आत्मसम्मान से जीने की इच्छा और भी प्रबल हो गई।

प्रश्न 31 (मध्यम). पिटाई के बाद भट्ठे पर मज़दूरों की क्या प्रतिक्रिया थी?
उत्तर – पिटाई के बाद मज़दूर 'डर गए' थे और 'अदृश्य भय और दहशत' में थे। सब अपने-अपने 'खोल में सिमट गए' थे और उन्हें लग रहा था कि सूबेसिंह कभी भी लौटकर आ सकता है।

प्रश्न 32 (कठिन). मानो 'किसनी नहीं बनना चाहती थी' - इस बात से आप क्या समझते हैं और इसका 'सम्मान और अस्मिता' के संघर्ष से क्या संबंध है?
उत्तर – मानो 'किसनी नहीं बनना चाहती थी' का अर्थ है कि वह किसनी जैसी मज़बूर, अपमानित और बेबस ज़िंदगी नहीं जीना चाहती थी, जिसे मालिक अपनी संपत्ति समझते थे। यह उसकी 'इज़्ज़त की ज़िंदगी जीने की अदम्य लालसा' को दिखाता है। उसका 'पक्की ईंटों का घर' बनाने का सपना भी इसी 'सम्मान और अस्मिता के संघर्ष' का प्रतीक है, जहाँ वह अपनी पहचान और मर्यादा के साथ जी सके।

» जातिगत भेदभाव और सामाजिक अलगाव

प्रश्न 33 (आसान). जसदेव को रोटी देने कौन गया था?
उत्तर – मानो

प्रश्न 34 (आसान). जसदेव ने रोटी क्यों नहीं खाई?
उत्तर – जातिगत भेदभाव के कारण

प्रश्न 35 (मध्यम). कहानी में किस बात से पता चलता है कि जसदेव भूखा था?
उत्तर – कहानी में लिखा है कि मानो ने जसदेव से कहा, 'सुबे से भूखा है। दो कौर पेट में जाएँगे तो ताकत तो आवेगी बदन में।' इससे पता चलता है कि उसे भूख लगी थी।

प्रश्न 36 (कठिन). मानो का जसदेव को रोटी खिलाने का प्रयास और जसदेव की झिझक 'जातिगत भेदभाव' और 'सामाजिक अलगाव' को कैसे उजागर करती है? विस्तार से समझाओ।
उत्तर – मानो इंसानियत के नाते जसदेव को रोटी खिलाने जाती है, क्योंकि वह घायल और भूखा है। वह 'मजदूर' होने के बावजूद 'बामन' जसदेव की मदद करना चाहती है। वहीं, जसदेव भूख लगने पर भी 'बामन' होने के कारण मानो जैसी 'मजदूर' जाति की औरत के हाथ की रोटी खाने में हिचकता है। यह घटना साफ तौर पर दिखाती है कि कैसे जातिगत भेदभाव और सामाजिक अलगाव ने लोगों के बीच एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी थी कि इंसानियत के रिश्ते भी इस दीवार के सामने कमज़ोर पड़ जाते थे, और भूखा आदमी भी अपनी जाति बचाने के लिए भूखा रहना पसंद करता था।

» आशा और निराशा के बीच सपनों का टूटना

प्रश्न 37 (आसान). सुकिया और मानो का सबसे बड़ा सपना क्या था?
उत्तर – पक्की ईंटों का अपना घर बनाना।

प्रश्न 38 (आसान). उनकी ईंटों को किसने तोड़ा था?
उत्तर – पाठ में सीधे नाम नहीं है, लेकिन सूबेसिंह जैसे लोगों की साजिश के कारण।

प्रश्न 39 (मध्यम). असगर ठेकेदार ने सुकिया और मानो की उम्मीदों पर पानी कैसे फेरा?
उत्तर – उसने टूटी-फूटी ईंटें कहकर उनकी ईंटों की मजदूरी देने से मना कर दिया, जिससे उनके पास घर बनाने के लिए पैसा नहीं बचा।

प्रश्न 40 (कठिन). यह घटना 'आशा और निराशा के बीच सपनों का टूटना' कैसे दर्शाती है? विस्तार से समझाएँ।
उत्तर – सुकिया और मानो ने पक्के घर की आशा में खूब मेहनत की, पर सूबेसिंह और ठेकेदार की बाधाओं से उनकी ईंटें टूट गईं और उन्हें मजदूरी भी नहीं मिली। इससे उनके सपने टूट गए और वे फिर से बेघर होकर निराशा में खानाबदोश जीवन जीने को मजबूर हुए।

» खानाबदोश जीवन की निरंतरता

प्रश्न 41 (आसान). कहानी में 'खानाबदोश जीवन' से क्या मतलब है?
उत्तर – एक जगह न रुक कर, काम की तलाश में लगातार घूमते रहना।

प्रश्न 42 (आसान). सुकिया और मानो को भट्ठा क्यों छोड़ना पड़ा?
उत्तर – उनकी ईंटें तोड़ी गईं और ठेकेदार ने मजदूरी नहीं दी, जिससे उनका घर बनाने का सपना टूट गया।

प्रश्न 43 (मध्यम). सूबेसिंह और ठेकेदार असगर के व्यवहार ने सुकिया और मानो के 'खानाबदोश जीवन की निरंतरता' को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – सूबेसिंह और असगर के शोषण और अन्याय ने उन्हें फिर से बेघर कर दिया और काम की तलाश में एक नई जगह जाने पर मजबूर किया, जिससे उनके खानाबदोश जीवन का चक्र जारी रहा।

प्रश्न 44 (कठिन). क्या आप सोचते हैं कि सुकिया और मानो के पास भट्ठा छोड़ने के अलावा कोई और विकल्प था? अपने उत्तर का कारण बताएँ।
उत्तर – नहीं, उनके पास शायद कोई और विकल्प नहीं था। उनकी ईंटें तोड़ी जा चुकी थीं और ठेकेदार ने भुगतान से इनकार कर दिया था। ऐसे में, जहाँ उन्हें काम का उचित दाम भी न मिले और उनका शोषण हो, वहाँ रुकना और भी मुश्किल होता। उनके लिए अपनी 'dignity and survival' बचाने का एकमात्र रास्ता वहाँ से चले जाना ही था।

» कहानी का संदेश और सामाजिक समस्याएँ

प्रश्न 45 (आसान). कहानी में कौन सी समस्या दिखाई गई है जहाँ मज़दूरों को उनकी मेहनत का पूरा दाम नहीं मिलता?
उत्तर – शोषण (Exploitation)

प्रश्न 46 (आसान). सूबेसिंह की पत्नी मानो को किस आधार पर गालियाँ देती थी?
उत्तर – जाति के आधार पर, यह जातीय उत्पीड़न का उदाहरण है।

प्रश्न 47 (मध्यम). सुकिया और मानो का पक्के घर का सपना किस सामाजिक समस्या से जुड़ा था?
उत्तर – यह 'गरीबी' और 'सम्मान के लिए संघर्ष' की समस्या से जुड़ा था, क्योंकि वे एक स्थायी और सम्मानित जीवन चाहते थे।

प्रश्न 48 (कठिन). कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने 'खानाबदोश' कहानी के माध्यम से समाज को क्या संदेश दिया है?
उत्तर – कहानीकार ने संदेश दिया है कि समाज में शोषण, जातीय उत्पीड़न, गरीबी और सम्मान के लिए संघर्ष जैसी गंभीर समस्याएँ आज भी मौजूद हैं, जिन पर हमें ध्यान देना और उन्हें हल करने का प्रयास करना चाहिए। उनका दृष्टिकोण इन समस्याओं के प्रति समाज में जागरूकता लाना है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का जन्म कहाँ हुआ था और उनके बचपन में उन्हें किन मुख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

› पहले प्रश्न के पहले भाग का उत्तर दें: 'ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का जन्म कहाँ हुआ था?'
› फिर प्रश्न के दूसरे भाग का उत्तर दें: 'उनके बचपन में उन्हें किन मुख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा?'
› दोनों उत्तरों को एक साथ मिलाकर एक पूरा वाक्य बनाएँ।

उत्तर – ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बरला गाँव में हुआ था। उनके बचपन में उन्हें सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों के साथ-साथ पढ़ाई के दौरान भी अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा।

उदाहरण 2. ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की 'रचना-दृष्टि' में डॉ. भीमराव अंबेडकर का क्या 'योगदान' रहा, अपने शब्दों में समझाइए।

› पहले बताओ कि 'रचना-दृष्टि' का मतलब क्या है - लेखक का किसी विषय को देखने और लिखने का नज़रिया।
› फिर समझाओ कि वाल्मीकि जी का बचपन कैसा था और उन्हें क्या मुश्किलें हुईं, जिससे उनका 'दलितों की पीड़ा' से सीधा संबंध बना।
› बताओ कि 'डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचनाओं का अध्ययन' करने से उन्हें क्या नई सोच मिली, जैसे 'दलित ही दलित की पीड़ा' को बेहतर समझ सकता है।
› अंत में समझाओ कि इस नई सोच ने उन्हें अपने 'अनुभवों को प्रामाणिक रूप' से व्यक्त करने की प्रेरणा दी और उनके लेखन में एक 'बुनियादी परिवर्तन' आया।

उत्तर – डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचनाओं के अध्ययन से ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की 'रचना-दृष्टि' में मौलिक परिवर्तन आया। अंबेडकर जी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने यह समझा कि दलितों की पीड़ा को 'दलित ही सबसे प्रामाणिक रूप' से व्यक्त कर सकता है। इससे उन्हें अपने 'जातीय अपमान और उत्पीड़न' का जीवंत और सच्चाई से भरा वर्णन करने की प्रेरणा मिली, जिसने उनके लेखन को एक नई पहचान दी।

उदाहरण 3. ओमप्रकाश वाल्मीकि जी को कौन-कौन से प्रमुख पुरस्कार मिले और उनकी सबसे प्रसिद्ध आत्मकथा का नाम क्या है?

› सबसे पहले हमें उनके साहित्यिक योगदान को देखना होगा।
› पाठ में बताया गया है कि उन्हें 'सन् 1993 में डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार' और 'सन् 1995 में परिवेश सम्मान' से सम्मानित किया गया।
› उनकी सबसे प्रसिद्ध आत्मकथा का नाम 'जूठन' है, जिसे 'न्यू इंडिया बुक पुरस्कार, 2004' भी मिला था।

उत्तर – ओमप्रकाश वाल्मीकि जी को सन् 1993 में डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार और सन् 1995 में परिवेश सम्मान मिला। उनकी सबसे प्रसिद्ध आत्मकथा 'जूठन' है।

उदाहरण 4. 'खानाबदोश' कहानी का मुख्य विषय क्या है? इसे विस्तार से समझाएँ।

› पहला कदम: 'खानाबदोश' कहानी का परिचय दें। यह ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी है जो मजदूर वर्ग के जीवन पर आधारित है।

› दूसरा कदम: 'मजदूर वर्ग के शोषण और यातना' का चित्रण करें। 'In the story, the exploitation and suffering of the labour class' को दिखाया गया है, जहाँ सूबे सहि जैसे लोग उन्हें जीने नहीं देते।

› तीसरा कदम: 'जातिवादी मानसिकता से उबरने की चुनौती' को स्पष्ट करें। मजदूर वर्ग 'is struggling to overcome the casteist mentality of our society' और अपनी पहचान बनाना चाहता है। 'सुकिया और मानो' जैसे पात्र अपनी मेहनत से आगे बढ़ना चाहते हैं, पर समाज उन्हें आगे बढ़ने नहीं देता।

उत्तर – 'खानाबदोश' कहानी ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखित मजदूर वर्ग के शोषण, उनकी यातनाओं और समाज की जातिवादी मानसिकता से ऊपर उठकर आत्मसम्मान के साथ जीने की उनकी चुनौती को चित्रित करती है। कहानी दर्शाती है कि कैसे 'सूबे सिंह' जैसे अमीर और ताकतवर लोग मेहनतकश मजदूरों को 'इज्जत के साथ जीवन जीने' नहीं देते।

उदाहरण 5. ईंट भट्ठे पर मजदूरों की दिनचर्या और आवासीय स्थिति का वर्णन कीजिए।

› पहले उनकी दिनचर्या पर ध्यान दें: वे दिहाड़ी मज़दूर थे और ईंटें पाथने का काम करते थे।

› काम की प्रकृति समझाएँ: 'मोरी पर काम करना' सबसे खतरनाक था, जहाँ 'थोड़ी-सी असावधानी भी मौत का कारण बन सकती थी'।

› आवासीय स्थिति बताएँ: वे 'दड़बेनुमा झोंपड़ियों में' रहते थे, जो 'एक कतार में बनी' थीं और इतनी नीची थीं कि 'झुककर घुसना पड़ता था'।

› सुरक्षा का अभाव: 'साँप-बिच्छू का डर लगा रहता था', खासकर रात में जब 'समूचा जंगल झोंपड़ी के दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया' जैसा लगता था।

› सुविधाओं का अभाव: 'टिमटिमाती ढिबरियाँ' ही रोशनी का एकमात्र साधन थीं, जो अंधेरे को दूर नहीं कर पाती थीं।

उत्तर – ईंट भट्ठे पर मज़दूर दिहाड़ी पर काम करते थे, जिसमें मोरी पर काम करना सबसे खतरनाक था, जहाँ ज़रा सी भी चूक जानलेवा हो सकती थी। वे दड़बेनुमा छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहते थे, जो इतनी नीची थीं कि उनमें झुककर घुसना पड़ता था। इन झोपड़ियों में रात को सिर्फ़ ढिबरी की थोड़ी रोशनी होती थी और उन्हें हमेशा साँप-बिच्छुओं जैसे जंगली जानवरों का डर लगा रहता था।

उदाहरण 6. सुकिया और मानो की किन बातों से हमें उनके सपनों और आकांक्षाओं का पता चलता है?

› पहला कदम, मानो के मन की बात देखो: 'अपने देस की सूखी रोटी भी परदेस के पकवानों से अच्छी होती है।' इसका मतलब है कि वह अपने गाँव की साधारण, सुरक्षित जिंदगी को इस असुरक्षित भट्ठे की 'पकवानों' जैसी जिंदगी से बेहतर मानती थी।

› दूसरा कदम, सुकिया के पैसों को बचाना: जब सुकिया ने 'पहले ही महीने में कुछ रुपये बचा लिए थे' और 'धोती की गांठ में बांधकर अंटी में खोंस लिए थे', तो यह दिखाता है कि वह भविष्य के लिए सोच रहा था।

› तीसरा कदम, मानो की खुशी और उम्मीद: रुपये देखकर 'मानो भी खुश हो गई थी' और उसे लगने लगा था कि वह 'अपनी जिंदगी के ढर्रे को बदल लेगा'। यह सीधा-सीधा उनके बेहतर जीवन के सपने को दर्शाता है।

उत्तर – मानो की गाँव के प्रति मोह और 'सूखी रोटी' को 'पकवानों' से बेहतर मानने की बात, सुकिया का पैसा बचाना और मानो की उस पैसे से 'अपनी जिंदगी के ढर्रे को बदलने' की उम्मीद, ये सभी बातें उनके बेहतर जीवन और अपने घर के सपनों को उजागर करती हैं।

उदाहरण 7. पाठ में 'सूबेसिंह' ने किसनी का शोषण किस प्रकार किया? कोई दो तरीके बताओ।

› पहला तरीका: सूबेसिंह ने किसनी को 'गारे-मिट्टी का काम छोड़कर दफ्तर की सेवा-टहल का काम' दिया। इसका मतलब है कि उसने अपनी ताकत का इस्तेमाल करके उसे सामान्य मजदूर के काम से हटाकर अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए इस्तेमाल किया।

› दूसरा तरीका: किसनी के पास 'साबुन' जैसी चीज़ का होना और उसका दफ्तर में अधिक समय बिताना, मजदूरों में 'फुसफुसाहटें' शुरू कर देता है। यह दर्शाता है कि सूबेसिंह ने उसके साथ गलत संबंध स्थापित किए थे, जिससे उसका नैतिक और सामाजिक शोषण हुआ।

उत्तर – सूबेसिंह ने किसनी को गारे-मिट्टी के मुश्किल काम से हटाकर अपने दफ्तर के निजी काम में लगाया और अपनी

ताकत का दुरुपयोग करके उसके साथ गलत संबंध स्थापित किए, जो उसके शोषण को दिखाता है।

उदाहरण 8. जसदेव की पिटाई की घटना का मानो पर क्या प्रभाव पड़ा और इससे 'सम्मान और अस्मिता का संघर्ष' कैसे उजागर होता है?

› सबसे पहले, जसदेव की पिटाई की घटना का वर्णन करें, कि कैसे सूबेसिंह ने उसे 'अधमरा' कर दिया और मज़दूर 'दहशत' में आ गए।

› फिर बताएं कि मानो ने जसदेव की मरहम-पट्टी की, लेकिन उसके मन में 'असंख्य अंधेरे नाच रहे थे'।

› बताएं कि मानो 'किसनी नहीं बनना चाहती थी', क्योंकि किसनी का जीवन सम्मानहीन था।

› स्पष्ट करें कि मानो 'इज़्ज़त की ज़िंदगी जीने की अदम्य लालसा' से भरी थी और 'पक्की ईंटों का घर' उसका सपना था, जो सम्मान का प्रतीक था।

› अंत में, निष्कर्ष निकालें कि जसदेव की पिटाई ने मानो के अंदर अपने 'सम्मान और अस्मिता' के लिए लड़ने की इच्छा को और मजबूत किया।

उत्तर – जसदेव की पिटाई ने मानो को अंदर तक झकझोर दिया। उसने देखा कि किस तरह एक मज़दूर को बिना किसी गलती के पीटा जा सकता है। इस घटना से उसके मन में 'किसनी' जैसी अपमानजनक ज़िंदगी न जीने की प्रबल इच्छा और 'इज़्ज़त की ज़िंदगी' जीने की 'अदम्य लालसा' पैदा हुई। उसका 'पक्की ईंटों का घर' बनाने का सपना अब सिर्फ एक घर का सपना नहीं, बल्कि 'सम्मान और अस्मिता' के साथ जीने के संघर्ष का प्रतीक बन गया था।

उदाहरण 9. कहानी में जसदेव ने मानो की रोटी क्यों नहीं खाई, जबकि उसे भूख भी लगी थी? इस घटना से 'जातिगत भेदभाव' कैसे उजागर होता है?

› सबसे पहले, हमें समझना होगा कि जसदेव और मानो अलग-अलग जातियों से थे - जसदेव 'बामन' (ऊँची जाति) और मानो 'मजदूर' (पिछड़ी जाति) थी।

› दूसरा, समाज में यह धारणा थी कि ऊँची जाति के लोग नीची जाति के लोगों के हाथ का बना खाना नहीं खाते, क्योंकि इससे उनकी जाति 'भ्रष्ट' हो जाती है।

› तीसरा, जसदेव को भूख तो बहुत लगी थी, क्योंकि 'सुबे से भूखा था' और पिटा हुआ भी था, लेकिन 'मन के भीतर कहीं हिचक थी' - यह हिचक इसी जातिगत भेद के कारण थी।

› चौथा, जब मानो ने पूछा, 'भूख नहीं है या कोई और बात है...', तो जसदेव ने बात को टाला, लेकिन मानो समझ गई कि यह उसकी 'बामन' होने की बात थी।

› आखिर में, जसदेव का भूखा रहने के बावजूद मानो के हाथ की रोटी न खाना, समाज में गहरे पैठे 'जातिगत भेदभाव' को साफ-साफ दिखाता है, जहाँ इंसानियत से ज्यादा जाति को महत्व दिया जाता था।

उत्तर – जसदेव ने जातिगत भेदभाव के कारण मानो की रोटी नहीं खाई, जिससे यह समस्या स्पष्ट रूप से उजागर होती है कि उस समय समाज में इंसानियत से बढ़कर जाति को माना जाता था।

उदाहरण 10. मानो और सुकिया ने पक्के घर का सपना क्यों देखा था और वह कैसे टूट गया?

› पहला चरण: मानो और सुकिया मजदूर थे, जिनकी कोई स्थायी जगह नहीं थी। वे एक स्थायी और सुरक्षित जीवन चाहते थे, जहाँ वे अपने परिवार के साथ चैन से रह सकें।

› दूसरा चरण: उन्होंने इस सपने को पूरा करने के लिए जी-तोड़ मेहनत की। भट्टे पर ईंटें बनाईं, एक-एक करके जोड़ा, ताकि उनका अपना 'पक्की ईंटों का मकान' बन सके।

› तीसरा चरण: सूबेसिंह जैसे जातिवादी तत्वों ने लगातार उन्हें परेशान किया। फिर असगर ठेकेदार ने उनकी बनी-बनाई ईंटों को 'टूटी-पफूटी' कहकर खरीदने से मना कर दिया और उनकी मेहनत का पैसा भी नहीं दिया।

› चौथा चरण: इन सब बाधाओं और अपमान के कारण, उनका घर बनाने का सपना 'पिफसलकर और दूर चला गया', और वे 'खानाबदोश' जीवन जीने को मजबूर हो गए। इस तरह उनकी आशाएँ पूरी तरह टूट गईं।

उत्तर – सुकिया और मानो ने एक स्थायी और सुरक्षित जीवन के लिए पक्के घर का सपना देखा था। यह सपना सूबेसिंह की बाधाओं और असगर ठेकेदार द्वारा उनकी मेहनत को नकार दिए जाने के कारण टूट गया, जिससे वे खानाबदोश जीवन जीने को मजबूर हो गए।

उदाहरण 11. खानाबदोश कहानी में सुकिया और मानो के भट्ठा छोड़ने का निर्णय उनके 'खानाबदोश जीवन की निरंतरता' को कैसे दर्शाता है?

› पहला कदम: याद करें कि सुकिया और मानो ने भट्ठे पर पक्का घर बनाने का सपना देखा था और खूब मेहनत की थी।

› दूसरा कदम: सूबेसिंह की वजह से उनकी ईंटें तोड़ दी गईं और ठेकेदार ने भी उन्हें उनकी मजदूरी नहीं दी, 'contractor refused to pay'.

› तीसरा कदम: इन घटनाओं के बाद, उनके पास कोई और रास्ता नहीं था, 'they had no other option', सिवाय उस भट्ठे को छोड़ने के।

› चौथा कदम: यह दर्शाता है कि वे 'forced to move again' - उन्हें फिर से अपनी जगह छोड़कर, काम और रोटी की तलाश में किसी और नई जगह जाना पड़ा। उनका एक जगह टिकने का सपना अधूरा रह गया, जो उनके निरंतर खानाबदोश जीवन का ही हिस्सा था।

उत्तर – सुकिया और मानो का भट्ठा छोड़ने का निर्णय यह दिखाता है कि कैसे उनके पक्के घर का सपना टूटने और शोषण का शिकार होने के बाद भी, उन्हें फिर से एक नई जगह की तलाश में निकलना पड़ा। यह उनके 'खानाबदोश जीवन की दुखद निरंतरता' को उजागर करता है, जहाँ वे कभी एक जगह स्थिर नहीं रह पाते।

उदाहरण 12. 'खानाबदोश' कहानी में दर्शाई गई किन्हीं दो सामाजिक समस्याओं का उल्लेख करते हुए कहानीकार के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

› पहला कदम: कहानी में दर्शाई गई सामाजिक समस्याओं को पहचानें। कहानी 'शोषण' और 'जातीय उत्पीड़न' जैसी प्रमुख समस्याओं को उजागर करती है।

› दूसरा कदम: इन समस्याओं का कहानी के संदर्भ में उदाहरण दें। 'शोषण' का उदाहरण है जब सूबेसिंह और ठेकेदार असगर सुकिया और मानो को उनकी मेहनत का पूरा फल नहीं देते, मज़दूरी रोक लेते हैं। 'जातीय उत्पीड़न' का उदाहरण है जब मानो को उसकी जाति के कारण गालियाँ दी जाती हैं और अपमानित किया जाता है।

› तीसरा कदम: कहानीकार के दृष्टिकोण को स्पष्ट करें। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी इन घटनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त शोषण और जातीय भेदभाव की कड़वी सच्चाई को हमारे सामने रखते हैं। उनका दृष्टिकोण इन समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा करना और यह दिखाना है कि कैसे वंचित वर्ग इन चुनौतियों का सामना करता है।

उत्तर – 'खानाबदोश' कहानी में मुख्य रूप से 'शोषण' और 'जातीय उत्पीड़न' की सामाजिक समस्याओं को दर्शाया गया है। कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का दृष्टिकोण इन समस्याओं को उजागर करना है, ताकि समाज इनके प्रति सचेत हो सके और इन पर चिंतन कर सके।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उनके जन्मस्थान और बचपन की कठिनाइयों को याद रखना बोर्ड परीक्षा के वस्तुनिष्ठ (objective) प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में 'लेखक की वैचारिक पृष्ठभूमि' या 'साहित्यिक योगदान' के संदर्भ में आ सकता है। अंबेडकर जी के प्रभाव को ज़रूर 'विस्तार से' समझाइए।

• यह कहानी 'विषय-वस्तु' और 'पात्र-परिचय' दोनों के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर 'मजदूर वर्ग के शोषण' और 'जातिवादी मानसिकता' पर आधारित प्रश्नों के लिए इसे अच्छे से तैयार करें।

• इस कहानी में ईंट भट्ठे पर काम करने की स्थितियों और मजदूरों के संघर्ष का वर्णन बहुत महत्वपूर्ण है। इसे विस्तार से याद करें, खासकर 'मोरी पर काम' और 'दड़बेनुमा झोपड़ियां' जैसे शब्दों पर ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कहानी के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए 'जातिगत भेदभाव' और 'सामाजिक अलगाव' के प्रभावों पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इस घटना को विस्तार से समझकर लिखना।

• इस भाग से 'सपनों के टूटने' की मार्मिकता और 'खानाबदोश' जीवन के दुख पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट करने को भी पूछा जा सकता है, इसलिए ध्यान से पढ़ना।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। सामाजिक समस्याओं को उनके सही नाम से लिखें और कहानी से उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› वाल्मीकि जी: जन्म बरला (उ.प्र.), बचपन में सामाजिक-आर्थिक और शैक्षणिक कष्ट।
› डॉ. अंबेडकर ने वाल्मीकि की 'रचना-दृष्टि' बदली; 'दलित पीड़ा' को 'प्रामाणिक अभिव्यक्ति' दी।
› मजदूरों का शोषण, जातिवाद से चुनौती, आत्मसम्मान की लड़ाई।
› भट्ठे पर खतरनाक काम, दड़बेनुमा झोंपड़ियाँ, जंगली जानवरों का डर।
› जातिगत भेदभाव: जसदेव का बामन होना और रोटी न खाना।
› गरीबों के पक्के घर का सपना, बाधाओं से टूटा, निराशा में खानाबदोश जीवन।
› कहानी का संदेश: शोषण, जातीय उत्पीड़न, गरीबी, सम्मान के लिए संघर्ष।